1. नृत्य और संगीत

(DANCES & MUSIC)

भरत मुनि का नाट्यशास्त्र, **नृत्य** के तीन पहलुओं का वर्णन करता है:

- **नाट्य,** यह नृत्य के नाटकीय तत्व का निरूपण है।
- **नृत्य:** इसका आशय नर्तन के माध्यम से वर्णित रस तथा भावों से है। इसमें मुखाभिव्यक्ति, हस्त-मुद्रा और पैरों की स्थिति के माध्यम से मनोदशा का निरूपण होता है।
- **नृत्त:** यह शुद्ध नृत्य है, जहां शरीर की गतिविधियां न तो किसी भाव का वर्णन करती हैं और न ही वे किसी अर्थ को प्रतिपादित करती हैं।

1.1. कथक

(Kathak)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- गूगल ने प्रसिद्ध कथक नृत्यांगना सितारा देवी की 97वीं जयंती गूगल डूडल के साथ मनायी।

सितारा देवी के संबंध में(About Sitara Devi)

- रबींद्रनाथ टैगोर द्वारा इन्हें '**नृत्य सम्राज्ञी**' कहा गया था,जिसका तात्पर्य "नृत्य की महारानी (Empress of Dance)" होता है।
- इन्हें संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, पद्म श्री, कालिदास सम्मान और इंडिया लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड जैसे प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

कथक (Kathak) के संबंध में

- यह उत्तर प्रदेश का एक परंपरागत शास्त्रीय नृत्य का स्वरूप है जिसके उद्भव के चिन्ह ब्रजभूमि की रास लीला से मिलते हैं। इसका नाम "कथिक" शब्द से व्युत्पन्न है जिसका अर्थ 'कहानी कहने वाला,' होता है।
    - `इस नृत्य की विशेषता इसका जटिल पद-चाप (फुटवर्क) है और यह सामान्यतः ध्रुपद संगीत के साथ प्रस्तुत किया जाता है। मुगल काल के दौरान तराना, ठुमरी और ग़ज़ल जैसे अन्य संगीत भी प्रस्तुत किए जाते थे।
- हिंदू और मुस्लिम परंपराओं के मिश्रण वाला यह एकमात्र भारतीय शास्त्रीय नृत्य है।
- कथक विभिन्न घरानों (लखनऊ, जयपुर, रायगढ़, बनारस) के विकास के लिए भी जाना जाता है क्योंकि यह संगीत की हिंदुस्तानी शैली पर आधारित एकमात्र शास्त्रीय नृत्य है।
- इस नृत्य से संबंधित अन्य प्रसिद्ध व्यक्तियों में बिरजू महाराज, लच्छू महाराज, दमयंती जोशी आदि प्रमुख हैं।

1.2. ओडिसी

(Odissi)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- ओडिसा सरकार भुवनेश्वर में ओडिसी संग्रहालय स्थापित करेगी।

ओडिसी के संबंध में

- ओडिसी ओडिसा की शास्त्रीय नृत्य शैली है।
- यह नृत्य शैली जल तत्व का प्रतिरूपण करती है।
- मूल रूप से इसका प्रदर्शन महरिज द्वारा किया जाता था जो मुख्यतः मंदिर नर्तकियां (देवदासियाँ) थीं। बाद में गोटूपुआ नामक लड़कों के समूह को इस कला में प्रशिक्षित किया गया। उन्होंने मंदिरों में और सार्वजनिक मनोरंजन के लिए नृत्य किया।

- ओडीसी में चेहरे के भाव, हस्त–मुद्राएं और शरीर की गतिविधियों का उपयोग एक निश्चित अनुभूति, एक भावना या नवरसों में से किसी एक के संकेत के लिए किया जाता है। मुद्राओं के प्रयोग में यह भरतनाट्यम के समान है।
- नर्तक अपने शरीर द्वारा जटिल ज्यामितीय आकार और आकृतियां बनाते हैं। इसलिए, इसे **"गतिशील मूर्तिकला"** के रूप में भी जाना जाता है।
- **गतिविधि की तकनीकियां** दो आधारभूत मुद्राओं- **चौक** (Chowk) तथा **त्रिभंग** (Tribhang) के समान निर्मित होती हैं।
    - **चौक** एक वर्ग (चौकोर) की स्थिति है, जिसमें शरीर के भार के समान संतुलन के साथ एक पुरुषोचित मुद्रा दिखती है। **त्रिभंग** मुख्यतः एक स्त्रियोचित मुद्रा है, जिसमें शरीर को गले, धड़ और घुटने तीनों जगह से मोड़ा जाता है।
- ओडिसी में प्रयोग किए जाने वाले प्रमुख संगीत वाद्ययंत्र पखावज, सितार, मंजीरा और बांसुरी हैं।

1.3. अन्य शास्त्रीय नृत्य

(Other Classical Dances)

नृत्य रूप	प्रमुख विशेषताऐं
कथकली	• केरल का शास्त्रीय नृत्य। • **नृत्य, संगीत और अभिनय का मिश्रण** ("कथा" का अर्थ कहानी और "कली" का अर्थ नाटक) • कथाओं का नाट्य रूप और अधिक व्याख्यान **अच्छाई और बुराई के मध्य के संघर्ष** को प्रदर्शित करता है। • **आकाश या व्योम** तत्व का निरूपण। • **हस्त मुद्राओं और मुखाभिव्यक्ति** का सुसंगत क्रम। • **शिरस्त्राण (सर की टोपी)** के साथ अलग-अलग रंगों से युक्त विस्तृत श्रृंगार। • **संबंधित वाद्ययंत्र: चेंडा** (Chenda), **मद्दलम्** (Maddalam), **चेंगिला** (Chengila), **इलथलम्** (Ilathalam), **इडक्का** (Idakka) और **शंखु** (Shankhu)।
भरतनाट्यम	• तमिलनाडु का सर्वाधिक प्राचीन शास्त्रीय नृत्य। • **एकहार्य** के नाम से भी जाना जाता है, जहां एक नर्तक एक ही प्रदर्शन में कई भूमिकाएं निभाता है। • **संबंधित वाद्ययंत्र:** मृदंगम, वीणा या वायलिन, बांसुरी और मजीरा/ करताल।
मणिपुरी	• **लाई हारोबा** के प्राचीन त्योहार में इसकी जड़ें मिलती हैं। वैष्णववाद के आगमन के साथ इस नृत्य को प्रसिद्धि प्राप्त हुई। • मणिपुरी नृत्य के सबसे लोकप्रिय रूप: **रास, संकीर्तन और थांग-टा।** • मुख्य विषय राधा, कृष्ण और गोपियों से संबंधित है। • मणिपुरी नृत्य में **तांडव** और **लास्य** दोनों सम्मिलित हैं। यह अपने लयबद्धता और आकर्षक गतिशीलता के लिए जाना जाता है। मुखाभिव्यक्ति अतिरंजित न होकर स्वाभाविक होती है। • **संबंधित उपकरण**: पुंग और करताल।
सत्रिया	• असम के महान वैष्णव संत **शंकरदेव** द्वारा वैष्णव धर्म के प्रचार हेतु इस नृत्य की शुरुआत।

	• इस परंपरा को **सत्रों** (वैष्णव मठ या विहार) द्वारा संरक्षित किया गया है। • **हस्तमुद्राओं, पद संचलनों, आहार्य और संगीत** आदि के संबंध में कठोर सिद्धांतों के द्वारा सत्रिया नृत्य की परंपरा संचालित होती है। • इस नृत्य से असम का **माजुली द्वीप** काफी गहराई से जुड़ा हुआ है।
मोहिनीअट्टम	• **केरल** की शास्त्रीय एकल नृत्य शैली, जिसका प्रदर्शन महिलाओं द्वारा किया जाता है। इसकी व्याख्या भस्मासुर को मारने के लिए विष्णु द्वारा धारण किये गये स्त्री रूप **'मोहिनी'** द्वारा किये गए नृत्य के रूप में की गयी है। • बिना किसी अनियंत्रित झटके या आकस्मिक अंतराल के शरीर की आकर्षक और लयात्मक गतिविधि इसकी मुख्य विशेषता है। • यह **लास्य** शैली से संबंधित है, जो स्त्रियोचित, कोमल और आकर्षक है। • **वायु** तत्व का निरूपण। • जटिल मुखाभिव्यक्ति के साथ हस्त मुद्राओं और मुखाभिनय का महत्व।
कुचिपुड़ी	• आधुनिक **आंध्र प्रदेश** के कृष्णा जिले के कुचीपुड़ी गांव में उत्पन्न। • वैष्णव कवि सिद्धेंद्र योगी द्वारा 17 वीं सदी में नृत्य-नाटक-यक्षगान से इसकी कल्पना की गई थी। • इसमें **पीतल की थाली के किनारे (रिम) पर नृत्य करना तथा सिर पर पानी से भरा घड़ा लेकर नृत्य करने जैसी तकनीकों का समावेश होता है। इसे तरंगम कहा जाता है।** • प्रायः,कुचीपुडी कलाकार, नर्तक और गायक दोनों की भूमिका निभाता है। शैली एकल और समूह दोनों प्रदर्शनों के लिए जानी जाती है। • नृत्य, कर्नाटक संगीत पर किया जाता है जहां गायक का साथ **मृदंगम, वायलिन, बांसुरी और तंबूरा** जैसे वाद्ययंत्रों द्वारा दिया जाता है।

1.4 संगराई नृत्य

(Sangrai Dance)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- पहली बार त्रिपुरा के पारंपरिक नृत्य संगराई को गणतंत्र दिवस परेड में प्रस्तुत किया गया।

अन्य सम्बंधित तथ्य

- महाराष्ट्र ने गणतंत्र दिवस परेड के अवसर पर सर्वश्रेष्ठ झाँकी का पुरस्कार जीता। यह झाँकी छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक पर आधारित थी, जिन्होंने शासन संचालन के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु अष्टप्रधान मंडल (आठ मंत्रियों की परिषद) का गठन किया था। अष्टप्रधान मंडल में निम्नलिखित सम्मिलित थे:
  - पेशवा (मुख्यमंत्री)
  - अमात्य या मजूमदार (वित्त विभाग)
  - सचिव या शूरुनवीस (पत्राचार विभाग)
  - सुमंत या दबीर (विदेश मंत्री)
  - सेनापति या सर-ए-नौबत (सेना की भर्ती, प्रशिक्षण और अनुशासन)
  - मंत्री या वाकयानवीस (राजा की व्यक्तिगत सुरक्षा)
  - न्यायाधीश (न्याय का प्रशासन)
- पंडितराव (धर्मार्थ कार्यों की देखभाल)
- हिमाचल प्रदेश की झाँकी में तिब्बती बौद्ध मठ **की-गोम्पा (Kye-Gompa)** का एक मॉडल का प्रस्तुत किया गया। यह मठ स्पीति घाटी में स्थित है तथा इसे 11वीं शताब्दी में स्थापित किया गया था।

- छत्तीसगढ़ की झाँकी में कलाकारों द्वारा कालिदास के मेघदूतम पर आधारित नृत्य का प्रदर्शन किया गया। मेघदूतम एक गीति-काव्य है। यह एक यक्ष की कहानी का वर्णन करता है, जिसे उसके राज्य से निर्वासित कर दिया गया था।

कालिदास की अन्य महत्वपूर्ण कृतियाँ

- **अभिज्ञान शाकुन्तलम् -** इसमें राजा दुष्यंत, शकुंतला एवं उनके पुत्र (भरत) के वात्सल्य, विरह और पुनर्मिलन का चित्रण किया गया है।
- **रघुवंश**- यह रामायण के विषयों से संबंधित है।
- **मालविकाग्निमित्रम् -** यह नाटक पुष्यमित्र शुंग के पुत्र अग्निमित्र की मालविका के साथ प्रेम कहानी पर आधारित है।
- **कुमारसंभव -** इसका विषय शिव और पार्वती का प्रेमालाप है।
- **ऋतुसंहार -** इस कविता में छह भारतीय ऋतुओं का चित्रण किया गया है।

विवरण

- यह संगराई त्यौहार के अवसर पर **मोग जनजाति** द्वारा किया जाता है।
- संगराई पर्व नव वर्ष के स्वागत में मनाया जाता है।
- मोग अराकनी वंश (भारत-बर्मा के अराकान क्षेत्र) से सम्बन्धित हैं और इस समुदाय के लोग बौद्ध धर्म का अनुसरण करते हैं।

1.5. ठुमरी

(Thumri)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- ठुमरी के बनारस और सेनिया घरानों की संस्थापक सदस्यों में से एक गिरिजा देवी का निधन हो गया।

पृष्ठभूमि

- भारतीय शास्त्रीय संगीत की दो मुख्य शैलियाँ हैं: उत्तर की हिंदुस्तानी शैली और दक्षिण का कर्नाटक संगीत।
- प्रसिद्ध हिन्दुस्तानी शैलियों में ध्रुपद, धमार, ख़याल, टप्पा और ठुमरी सम्मिलित हैं।
- **ठुमरी (Thumri) :** यह मुख्य रूप से महिला के परिप्रेक्ष्य में लिखे जाने वाले प्रणय गीतों की गायन शैली है। इसे हिंदी की एक साहित्यिक बोली में गया जाता है जिसे ब्रज कहते हैं। **ठुमरी** की संरचना और प्रस्तुति अत्यधिक काव्यात्मक है।
- **ध्रुपद (Dhrupad) : तानसेन** सबसे प्रसिद्ध ध्रुपद गायकों में से एक थे। वह सम्राट अकबर के दरबार के नौ-रत्नों में से एक थे। यह एक उत्तर भारतीय शैली है जिसकी प्रस्तुति सीधे रूप में होती है और इसमे कोई सजावट या अलंकार नहीं होता है। गायकों के साथ बीन एवं पखावज वाद्य यंत्र का प्रयोग किया जाता है।
- **धमार (Dhamar):** धमार ध्रुपद के समान ही एक संगीत शैली है लेकिन इसमें अलंकार अधिक होता है।
- **ख़याल (Khayal):** ख़याल का अर्थ "कल्पना" होता है। 13वीं शताब्दी में अमीर खुसरो ने इसे प्रोत्साहन दिया। यह अधिक विस्तृत सजावट और कशीदेकारी वाली शास्त्रीय गायन की एक शैली है। ख़याल के विभिन्न घराने- ग्वालियर घराना, आगरा घराना आदि हैं।
- **टप्पा (Tappa):** इसमें तेज़ी से असमान लयबद्ध लहज़े में बुने शब्दों का गायन सम्मिलित होता है। टप्पा रचनाओं का राग ठुमरी शैली के समान होता है।

हिंदुस्तानी संगीत (Hindustani music)	कर्नाटक संगीत (Carnatic music)
• इसकी जड़ें वैदिक परंपराओं में हैं, जहां सामवेद (एक पवित्र ग्रन्थ) के श्लोकों को, मंत्रोच्चारण के स्थान पर गाया जाता था। • इस पर तुर्की-फ़ारसी संगीत के तत्वों का प्रभाव है • इसमें समय की बंदिश रहती है। • इसमें एक से अधिक गायन शैलियाँ हैं जिन्हें घरानों के नाम से जाना जाता है। • तबला, सारंगी, सितार, संतूर, शहनाई, वायलिन और बांसुरी का उपयोग।	• यह भक्ति आंदोलन के समय व्यापक स्तर पर विकसित हुआ। • इस पर कोई तुर्की-फारसी प्रभाव नहीं है। • इसमें ऐसी कोई बंदिश नहीं है। • इसे एक विशिष्ट ढंग से गाने के लिए लिखा जाता है। • वीणा, मृदंगम, मण्डोलिन, जलतरंगम, वायलिन और बाँसुरी का प्रयोग